शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
728 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

''राधाकृष्ण व्यंग्यकार के रूप में''

नेहा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय,
राँची, (झारखण्ड)
Email: pravesh500@rediffmail.com

सारांश

सर्जनादायक लेखन की महत्वपूर्ण विद्या व्यंग्य लेखन है। वास्तवीकता यह है कि व्यंग्य लेखन अपने समय से जूझते रहने की निरंतर प्रक्रिया का परिणाम है। इस प्रकार यह विद्या एक विद्रोही तेवर लिए वर्त्तमान, समकालीन परिदृश्य को सामने लाने के लिए गहरी पकड़ और रचनात्मक आकलता की आवश्यकता है। व्यंग्य लेखन नकारात्मक लेखन नहीं है। व्यंग्य अपने समय के यथार्थ को इस प्रकार प्रस्तुत करने वाला लेखन है कि सकारात्मक पक्ष अधिक दृढ़ हो सके।

भारतेन्द्र हरिश्चंद से आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की शुरूआत मानी गई। उनकी व्यंग्य रचनाएँ 'अन्धेर नगरी' और 'ताजी राते शौहर' प्रारम्भिक व्यंग्य रचनाएँ हैं। उनके समकालीन व्यंग्यकार प्रताप नारायण मिश्रा, बालकृष्ण भट्ट आदि प्रमुख थे। इनके पश्चात् जी०पी० श्रावास्तव ने व्यंग्य के क्षेत्र में प्रचुर लेखन किया था। इस श्रृंखला को बाद में निराला, हरिशंकर परसाई, नागार्जून, श्री लाल शुथल, बदीउज्जयां, अशोक मजीठिया, शरद जोशी, ज्ञान चतुर्वेदी, डॉ० पालेन्दु, शेखर तिवारी आदि कई व्यंग्य लेखकों ने पल्लविल किया। इस परंपरा में कई व्यंग्यकार हुए परन्तु राधाकृष्ण का योगदान इस क्रम में विशिष्ट और अविरमरणीय रहा है।

प्रस्तावना

प्रत्येक लेखक किसी न किसी परंपरा में रहता है या स्वयं कोई नई परंपरा परिवर्तित करता है। हर स्थिति में उसके सामने कोई परंपरा रहती है। जिसे वह सकारता या नकारता है। व्यंग्यकार राधाकृष्ण को भी अपने प्रारंभिक रचनाकाल में हिन्दी की एक कथा परंपरा मिली थी जिसमें दो व्यक्तियों ने उन्हें प्रेरित और प्रभावित किया था। एक थे प्रेमचंद और दुसरे जी०पी० श्रीवास्तव। राधाकृष्ण जी०पी० श्रीवास्तव के प्रशंसक भी थे। उनकी प्रशंसा करते हुए राधाकृष्ण लिखते हैं – ''मेरी चले तो मैं ताजमहल के गुम्बद पर बिठा हूँ। जब कोई विदेशी ताज देखने आता तब मैं गर्वपूर्वक उसकी ओर उँगली उठाता और कहता कि वह देखो, हमारा व्यंग्य लेखक यहाँ बैठा है।''[1]

राधाकृष्ण ने जी०पी० श्रीवास्तव की व्यंग्य परंपरा का अपने ढंग से चुनाव किया और उसे एक नई और प्रेमचंदीय प्रतिष्ठता दी।

जी०पी० श्रीवास्तव की व्यंग्य रचनाएँ किसी गंभीर सामाजिक प्रयोजन से प्रेरित नहीं होता था। इस दृष्टि से राधाकृष्ण को देंखे तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि उन्होंने हिन्दी व्यंग्य परंपरा को बहुत गहराई से प्रभावित और परिवर्तित किया। इस परंपरा का कथा लेखन समाज की विसंगतियों और जाने अनजाने उनसे जूझते व्यक्ति की विवशता का दस्तावेज बन जाता है। इस तरह राधाकृष्ण ने आधुनिक व्यंग्य के क्षेत्र में मौलिक परिवर्तन कर डाली। वे अपनी पूर्ण परंपरा को तोड़ते हुए परवर्ती व्यंग्यकारों के प्रेरक भी बन जाते हैं। इस लिए भगवती प्रसाद बाजपेयी, नीलन विलोचन शर्मा आदि ने इन्हें व्यंग्य का पुरोधा बतलाया था।

आज के साथ में जो व्यंग्य लिखे जा रहे हैं उसी बुनियाद राधाकृष्ण द्वारा ही डाली गई थी। भगवती प्रसाद बाजपेयी लिखते हैं कि –

''उनकी व्यंग्यपूर्ण शैली से हिन्दी कथा साहित्य को बल मिला है। .....अनेक बार मेरे मन में आया है कि हमारे आजकल के जीवन की व्यापार दृष्टि और नैतिक अधोगति पर जैसा तीव्र व्यंग्य पहले–पहल भाई राधाकृष्ण जी ने हिन्दी कहानी को दिया है। वैसा उनके पूर्व और किसी ने नहीं दिया।''[2]

राधाकृष्ण की रचनाओं को पढ़कर प्रेमचंद ने लिखा –

''आपकी कई कहानियाँ प्रसिद्ध हो चुकी है। आपकी रचनाओं में व्यंग्य की चाश्नी रहती है।''[3]

राधाकृष्ण व्यंग्य लिखने में सिद्धहस्त थे। उनकी जीवन इतना कष्टमय था कि उनका साहित्यकार व्यंग्य रूप में सामने आया। हमें उनकी अधिकांश रचनाओं में व्यंग्य की प्रधानता देखने को मिलती है।

नागार्जुन लिखते हैं –

''व्यंग्य–विद्रूप, काकु और वक्रोवित की एक अपूर्व चाबुक हमारे इस साहित्यकार ने ईजाद की।''[4]

बहलेन्द्र शेखर तिवारी ने लिखा है विश्वनाथ मुखर्जी ने अपने व्यक्तिगत पर्यवेक्षण तथा अध्ययन के आधार पर लिखा है– ''आज हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकारों की फसल उसी जमीन पर लहलहा रही है, जिस जमीन को राधाकृष्ण ने कोड़–जोत कर समतल एवं खेती के योग्य बनाया था। उस जमीन पर उन्होंने व्यंग्य के जो विकसित बीज डाले थे आगे चलकर उनके उत्तराधिकारियों ने उसी की फसल काटी और वे कुशल व्यंग्यकार माने गये।''[5]

राधाकृष्ण जन–जीवन के व्यंग्यकार है। उनकी रचनाओं में जीवन के विभिन्न तत्वों का समावेश हुआ है। उनकी एक बड़ी विशेषता यह भी है कि उनकी व्यंग्य रचनाओं में कहीं से अश्लीलता की गंध नहीं आने पायी है। राधाकृष्ण का व्यंग्य जितना ही बहुआयामी है, उतना ही ऐश्वर्यशील भी, जितना ही प्रेरक है, उतना ही प्रसंगिक भी। प्रो० रामजी पाण्डेय ने ठीक ही कहा है –

''आधुनिक कहानी लेखकों में राधाकृष्ण जी का स्थान बहुत ऊँचा है। वे अपनी कहानियों के विषय के लिए किसी कल्पना लोक में विचरण नहीं करते, अपितु इसी ठोस धरती

के दु:ख–दर्द तथा कार्य–कलाप का चित्रण करते हैं। राधाकृष्ण गंभीर प्रकृति की भी कहानियाँ लिखते हैं और व्यंग्य प्रधान थी। उन्होंने अपनी कहानियों के लिए सबसे अधिक उपकरण जीवन के विविध संघर्षों से चुने हैं।''[6]

राधाकृष्ण ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में जिस सामाजिक सत्य का उद्घाटन किया है वह केवल बाह्य सत्य पर आधृत न होकर अन्तः सत्य पर आधृत है। इसलिए उनके रचनाओं में स्वतः ही थुलुता और प्रभावन्विति आ गयी है। वस्तुतः राधाकृष्ण के रचनाओं में व्यंग्य सजीव हो उठा है। ऐसी कहानियाँ उन्होंने घोश, बोस, बनर्जी इत्यादि के दृढ़म नामों से लिखी है।

''इन कहानियों की विषय–वस्तु ऐतिहासिक, धार्मिक सामाजिक हैं। पात्रों के नामकरण में भी मूल शब्द की विडम्बना की गयी है। जैसे 'बुद्धदेव' कहानी में बुद्धदेव को भी बुद्धदेव कहा गया है।''[7]

राधाकृष्ण एक सधे हुए व्यंग्यकार थे। सामान्य जनों में घुलने मिलने के कारण उन की भाषा पर जन भाषा का प्रभाव था, जीवन में मिली तलखी से चीजों को देखने की एक विशिष्ट भंगिया उन्हें मिली थी। वह नात को ऐसे पहलू से पीछड़ते थे और हल्का सा खम देकर ऐसे अन्दाज में कहते थे कि पाठक भौचक्का रह जात था। जो राधाकृष्ण की समर्थता असंदिग्ध थी। उन्होंने हिन्दी व्यंग्य को तब ठोस जमीन दी थी, जब हिन्दी में व्यंग्य लिखने की परंपरा अपनी शैशवास्था में थी।

राधाकृष्ण ने ऊँचे दर्जे के व्यंग्य लेखन का बीहड़ मार्ग चुना था। ऐसा करना सभी के लिए संभव नहीं है। इसके लिए पैनी नजर और गहरी पकड़ की जरूरत होती है और साथ ही साथ उसे एक खास अन्दाज में पेश करने के कौशल की भी। यह कार्य तलवार के धार पर चलने के समान है। थोड़ी सी चूक होते ही वह फूहड़ या बकवास लगने लगेगा। राधाकृष्ण ने यह अच्छी तरह से साथ लिया था। इन दोनों अलियों से बचकर उन्होंने उच्च कोटि का व्यंग्य लिखा है।

'मुक्त' जी राधाकृष्ण के विषय में बताते हैं– ''वह बहुत नपा–तुला, बड़ा पैना, कभी–कभी बड़ा तीखा भी, व्यंग्य लिखते थे। निःसंदेह उनकी ऐसी रचनाओं में अपेक्षित प्रभाव डालने की क्षमता होती थी।''[8]

राधाकृष्ण ने बड़े ही सहज–सरल ढंग से अपनी रचनाओं में व्यंग्य का 'पुट रखा है जिसे सभी वर्ग के लोगों को आनन्दोपलब्धि होती है।

''हिन्दी में ऐसे हास्य–व्यंग्य लेखकों का प्रायः अभाव ही है। राधाकृष्ण हिन्दी के उसी अभावग्रस्त क्षेत्र के पलारा–वृक्ष की तरह हैं जो अपने स्निग्ध हास्य की लाली से पाठक को गुदगुदा दिया करते हैं।''[9]

हिन्दी व्यंग्य साहित्य में राधाकृष्ण जी की एक विशेष द्वीप रूढ़ हो गई है। जिसका पाचक उनका उपनाम घोष बोस–बनर्जी–चटर्जी है। सामान्य पाठक ही नहीं, अधिकांश समीक्षक भी उन्हें व्यंग्यकार के रूप में देखते और पारिभाषित करते हैं। साक्ष्य के 'रूप में वे' प्रोफेसर भीम गंधराव', 'वरदान का फेर' कहानियों को प्रस्तुत करते हैं या 'फुटपाथ' और 'सनसनाते सपने' जैसे उपन्यासों को वस्तुतः वे साहित्य जगत की राजनीति से अलग जनप्रीतकथा के साथ वे कहानी

उपन्यास, बालकाएँ तथा व्यंग्य लिखते रहे और बाद की पीढ़ी के लिए एक रास्ता दिया। प्रेमचन्दोत्तर कथा साहित्य के तमाम चर्चित कथाकारों से अलग उनकी 'एक पहचान है। उनकी एक अलग पहचान कथा साहित्य में व्यंग्य के मुखर प्रयोक्त की है। उनकी इस शैली का विकास बाद में पारसाई, शरदजोशी, रवीन्द्र नाथ त्यागी, ज्ञान चतुर्वेदी आदि में मिलता है। आचार्य नीलन विलोचन शर्मा ने उनकी व्यंग्य परक कहानियों के बारे में लिखा है कि– ''घोष–बोस–बनर्जी–चटर्जी के उपनाम से कहानियाँ लिखकर व्यंग्य के क्षेत्र में युगान्तर लाने वाले व्यक्ति आप ही है। आयासहीन ढंग से लिखा गया ऐसा व्यंग्य हिन्दी साहित्य में विरल है।''[10]

राधाकृष्ण के लेखन में विषय वस्तु की दृष्टि से समकालीन जीवन, उसकी विसंगतियाँ तथा शोषित–दलित एवं उपेक्षित वर्ग का जीवन रहा है तो शैली की दृष्टि से व्यंग्य प्रधान शैली उनका प्रमुख अस्त्र रही है। इस रूप में राधाकृष्ण एक ऐसे व्यंग्यकार के रूप में सामने आते हैं जो अपने समय से संवाद तो करता ही है, परम्परा से भी पर्याप्त रस ग्रहण करता है। व्यक्ति हो या समूह, शिक्षा हो या साहित्य, समाज हो या राजनीति, वह जहाँ भी विसंगति देख पाते उस पर निर्भय प्रहार करते थे, लेकिन शैली ऐसी कि चोट न लगे और बात मर्म को घूलेः सम्बद्ध व्यक्ति को पीड़ा न पहुँचे, लेकिन वह लितमिला उठे। ऐसे प्रसंगों में वह अपने को भी नहीं बख्शते थे। वे बड़े निडर होकर लिखते थे। पद की लालसा उन्हें कभी छिपा नहीं सकी। वे स्वतंत्र होकर लिखते थे। जीवन में झेले कष्टों ने उन्हें व्यंग्यकार बना दिया था। डॉ० बरसाने लाल चतुर्वेदी ने अपने शोध प्रबंध में लिखा है– ''राधाकृष्ण को किया देश के श्रेष्ठ व्यंग्यकार की तुलना में हम रख सकते हैं।''[11]

गुलाब राय ने राधाकृष्ण की प्रशंसा करते हुए लिखा है–

''राधाकृष्ण अपने व्यंग्यात्मक लेखन के द्वारा पाठकों से अधिक परिचित हैं। आज के मानव की व्यथा, उसका मानसिक दबाव आदि की व्यंग्यपूर्ण अभिव्यक्ति इनकी विशेषता है।''[12]

'मुक्त जी' लिखते हैं– ''बात 1950 के आसपास की है। मैं रेडिया पर राधाकृष्ण की एक चर्चा सुन रहा था'' व्यंग्य से उसका कोई सरोकार नहीं था। राधाकृष्ण ने बात उठायी भी पूरी गम्भीरता से, लेकिन आधा मिनट भी न बीता होगा कि उनका व्यंग्यकार बोलने लगा। उन्होंने अपनी शिक्षा की चर्चा करते हुए कहा– जब गाँधी जी का सत्याग्रह आन्दोलन छिड़ा तो मैं सरकारी स्कूल से नाम कटा कर राष्ट्रीय विद्यालय में पढ़ने चला गया। वहाँ सब कुछ था, मास्टर थे, विद्यार्थी थे, टेबुल कुर्सियाँ थी ब्लैक बोर्ड भी था। अगर कोई चीज नहीं थी तो सिर्फ पढ़ाई नहीं थी। मैं जितने दिनों तक वहाँ रहा मैंने सीखने के नाम पर सिर्फ बीड़ी पीना सीखा'' ऐसी ही जाने और कितनी बातें राधाकृष्ण जी ने बड़ी से जींदगी और मासूमियत से कहीं। जिसे सुन कर मैं हँसते–हँसते दुहरा हो गया था।''[13]

दिनेश्वर प्रसाद कहते हैं–

''राधाकृष्ण ने हिन्दी की हास्य व्यंग्य परम्परा को बहुत गहराई से प्रभावित किया और परिवर्तित किया जहाँ उनका मूल सरोकार समाज से है।''[14]

राधाकृष्ण स्वतंत्रता सेनानी थे पर उन्होंने इसके चलते मिलने सुविधाओं के लिए कभी कोई आवेदन–पत्र नहीं दिया। वे स्वतंत्र भारत में भी उसी खपड़ैल मकान में रहते थे, जिस मकान में वह अंग्रेजी शासन में थे। उनके जीवन को स्वन्त्रता की विभाजन रेखा भी विभाजित नहीं कर सकी। इसलिए राधाकृष्ण के व्यंग्य में इतनी धार है। यह धार लोहार से उधार ली हुई धार नहीं है। उनका पूरा जीवन ही सान पर बराबर चढ़ा रहा तब जाकर उन्हें यह धार मिली है। श्रवण कुमार गोस्वामी लिखते हैं– ''व्यंग्यकार बड़ा निर्मम होता है शल्यक की तरह। शल्यक जिस प्रकार शरीर के सड़े–गले अंग पर चाकू चलाने में जरा भी नहीं हिचकता है, वैसा ही होता है व्यंग्यकार और उसे भी अपनी लेखनी किसी भी विशय पर चलाने में कोई डर या भय नहीं होता। राधाकृष्ण ऐसे ही व्यंग्यकार है।''[15]

राधाकृष्ण अपनी विलक्षण प्रतिमा का परिचय व्यंग्य के सम्मिलित क्षेत्र में देते हैं। आगे चलकर उनका व्यंग्यकार एक प्रकार से स्वतंत्र हो जाता है। राधाकृष्ण के सम्बन्ध में विश्वनाथ मुखर्जी जो लिखते हैं– ''मैं आज भी मानता हूँ कि प्रेमचंद के बाद मुख्य तीन कथाकारों ने मुझे विषेश रूप से प्रभावित किया है। स्वर्गीय बलदेव प्रसाद मिश्र, द्विजेन्द्र प्रसाद मिश्र 'निर्गुण' और राधाकृष्ण जी।...''[16]

व्यंग्यकार राधाकृष्ण के व्यक्तित्व निर्माण में यथार्थ और व्यंग्य का जैसा संतुलित समाहार दिखलायी देता है, वह अपने आप में अद्वितीय है। हम यह कह सकते हैं कि हिन्दी व्यंग्य के क्षेत्र में राधाकृष्ण अकेले हैं और उनकी तुलना किसी अन्य लेखक से नहीं की जा सकती, क्योंकि वे अपने लिए स्वयं उपमेय भी हैं और उपमान भी।

'मुक्त' जी ने लिखा है– ''हिन्दी के व्यंग्य कथाकारों में मैं राधाकृष्ण का अप्रतिम स्थान मानता हूँ। हिन्दी को उन्होंने जो कुछ दिया है उसके मुकाबले हिन्दी ने उन्हें उसका प्राप्त सम्मान भी नहीं दिया।''[17]

राधाकृष्ण का इतना लिखना, इतना वैविध्यपूर्ण लिखना, वह भी जीवन–संघर्ष की जटिलताओं के बीच। यह आश्चर्य में डाल देता है, हर काल और हर भाषा में ऐसे रचनाकारों की एक बड़ी संख्या होती है जिनके पास अध्ययन की पूँजी ले होती है, पर उनमें स्वानुभूति का अभाव होता है। शास्त्र या वाद से प्रेरित होकर लिखना ऐसे लेखकों की मजबूरी होती है। जिनके पास स्वानुभूति की पूँजी नहीं होती। ऐसे ही लेखक अपने पाठकों के समक्ष जूठन परोसते हैं। सम्भवतः मालूम होता है कि ऐसे लेखों को ही ध्यान में रखकर कबीरदास ने कहा होगा–

''मैं कहता ऑखिन की देखी, तू कहता अंगद की लेखी।'' को राधाकृष्ण की रचनाओं को पढ़ने के बाद हम यह कह सकते हैं कि कबीर का यह कथन पूरी तरह से उनपर लागू होता है। राधाकृष्ण की व्यंग्य रचनाएँ इस बत की प्रमाण है कि उनमें जिस यथार्थ, हर्ष–विषाद, आशा–निराशा, अभिलाषा–हताशा, जिजीविशा, संघर्ष, विसंगीत आदि का चित्रण है। वह उधार की अनुभूति न होकर स्वयं उनका भोगा हुआ अपना यथार्थ है। जो कि व्यंग्य के माध्यम से हमारे समक्ष रखते है। यही वजह है कि उनकी रचनाएँ विश्वसनीय लगती है।''[18]

'रवीन्द्रनाथ त्यागी' जी ने राधाकृष्ण की महत्ता को स्वीकार करते हुए लिखा है– ''भारतेन्द्र के बाद शिष्ट व्यंग्य लिखने वालों में अन्नपूर्णानन्द, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक और राधाकृष्ण ये तीन मूर्तियाँ सबसे ऊँची ठहरती है।''[19]

अतः व्यंग्यकार राधाकृष्ण जी ने अपने व्यंग्यों के माध्यम से शोषक अमानवीय एवं मानवता विरोधी शक्तियों पर जमकर प्रहार किया है। उन्होंने एक साधक साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य की विविध रूपों में सेवा की है। वे एक मानवतावादी कथाकार थे जो पीड़ित मानवता को अपनी व्यंग्य रचनाओं द्वारा सुख दिलाना चाहते थे। ऐसे जमीन से जुड़े, सार्थक प्रतिरोध रचने वाले व्यंग्यकार का स्मरण उनकी रचनाओं का अपने समय एवं सन्दर्भ से पुर्नपाठ आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. *राधाकृष्ण महापुरूष या महास्त्री* जी.पी. श्रीवास्तव, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 29 मार्च, 1970
2 *ब्रहर्षि समाज दर्शन*, पृ०– 20
3 *राधाकृष्ण के उपन्यासों में यथार्थ चित्रण,* शंभूनाथ सिंह, पृ०–19
4 *ब्रहर्षि समाज दर्शन,* पृ० – 19
5 *राधाकृष्ण* श्रवण कुमार गोस्वमी, पृ०– 35
6 *परिषद*–पत्रिका शोध–त्रैमासिक, पृ०–27
7 डॉ० चन्द्र भूषण मिश्र– *हिन्दी कहानी के विकास में बिहार का योगदान*
8 *राधाकृष्ण के उपन्यासों में यथार्थ चित्रण*–शंभुनाथ सिंह, पृ०–19
9 परिषद पत्रिका, कहानीकार राधाकृष्ण, पृ०– 24
10 जमीन से जुड़ा रचनाकारः राधाकृष्ण, पृ० 35
11 राधाकृष्ण के उपन्यास में यथार्थ चित्रण, शंभूनाथ सिंह, पृ०–20
12 वही, पृ० – 21
13 राधाकृष्ण प्रफुल्ल ओझा, पृ० – 41
14 *राधाकृष्णः एक अप्रतिहत रचनाकार*, पृ० – 34
15 राधाकृष्ण, *भारतीय साहित्य के निर्माता,* साहित्य अकादमी, पृ०– 101
16 आज सांय समाचार *'साप्ताहिक विशेषांक'* 10 सितम्बर, 1972, पृ०–13
17 रा० के उ० में य० चि०, पृ०– 21
18 रवीद्रनाथ त्यागी, *'शोक सभा'* में संतुलित रचना, पृ० – 16–17
19 *राधाकृष्ण अभिनंदन* ग्रंथ, पृ० – 123